एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 01, अंक: 04 (सितम्बर-अक्टूबर, 2021)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

जैविक खेती-भविष्य का एक आधार

(*नरेश कुमार कुमावत, रामराज प्रजापत एवं आत्मा राम मीना)
शोधार्थी, स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर-334006
* kumawatnaresh155@gmail.com

संपूर्ण विश्व में बढती हुई जनसंख्या एक गंभीर समस्या हैं, बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ भोजन की आपूर्ति के लिए मानव द्वारा खाद्य उत्पादन की होड़ में अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए तरह – तरह की रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों का उपयोग, प्रकृति के जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान–प्रदान के चक्र (इकॉलोजी सिस्टम) को प्रभावित करता हैं, जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति खराब हो जाती है, साथ ही वातावरण प्रदूषित होता है, तथा मनुष्य के स्वास्थ्य में गिरावट आती है।

प्राचीन काल में मानव स्वास्थ्य के अनुकूल तथा प्राकृतिक वातावरण के अनुरूप खेती की जाती थीं, जिससे जैविक और अजैविक पदार्थो के बीच आदान–प्रदान का चक्र (इकॉलोजी सिस्टम) निरन्तर चलता रहता था, जिसके फलस्वरूप जल, भूमि, वायु तथा वातावरण प्रदूषित नहीं होता था। भारत वर्ष में प्राचीन काल से कृषि के साथ–साथ गौ पालन किया जाता था, जिसके प्रामण हमारे ग्रांथो में प्रभू कृष्ण और बलराम हैं जिन्हें हम गोपाल एवं हलधर के नाम से संबोधित करते है। अर्थात कृषि एवं गौपालन संयुक्त रूप से अत्याधिक लाभदायी था, जोकि प्राणी मात्र व वातावरण के लिए अत्यन्त उपयोगी था। परन्तु बदलते परिवेश में गौपालन धीरे–धीरे कम हो गया तथा कृषि में तरह–तरह की रायायनिक खादों व कीटनाशकों का प्रयोग हो रहा है। जिसके फलस्वरूप जैविक और अजैविक पदार्थो के चक्र का संतुलन बिगड़ता जा रहा है। और वातावरण प्रदूषित होकर, मानव जाति के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। अब हम रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर, जैविक खादों एवं दवाईयों का उपयोग कर, अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं। जिससे भूमि, जल एवं वातावरण शुद्ध रहेगा और मनुष्य एवं प्रत्येक जीवधारी स्वस्थ रहेंगें।

भारत वर्ष में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार कृषि है और कृषकों की मुख्य आय का साधन खेती है। हरित क्रांति के समय से बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए एवं आय की दृष्टि से उत्पादन बढ़ाना आवश्यक है अधिक उत्पादन के लिये खेती में अधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाश्क का उपयोग करना पड़ता हैं जिससे सीमान्त व छोटे कृषक के पास कम जोत में अत्यधिक लागत लग रही है। और जल, भूमि, वायु और वातावरण भी प्रदूषित हो रहा है। साथ ही खाद्य पदार्थ भी जहरीले हो रहे है। इसलिए इस प्रकार की उपरोक्त सभी समस्याओं से निपटने के लिये गत वर्षो से निरन्तर टिकाऊ खेती के सिद्धान्त पर खेती करने की सिफारिश की गई, भारत सरकार भी इस

विशेष प्रकार की खेती को अपनाने के लिए प्रचार –प्रसार कर रही है। जिसे हम ''जैविक खेती'' के नाम से जानते है।

जैविक खेती से होने वाले लाभः–

कृषकों की दृष्टि से लाभ– भूमि की उपजाऊ क्षमता में वृद्धि हो जाती है। सिंचाई अंतराल में वृद्धि होती है। रासायनिक खाद पर निर्भरता कम होने से कास्त लागत में कमी आती है। फसलों की उत्पादकता में वृद्धि।

मिट्टी की दृष्टि से– जैविक खाद के उपयोग करने से भूमि की गुणवत्ता में सुधार आता है। भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ती है। भूमि से पानी का वाष्पीकरण कम होगा।

पर्यावरण की दृष्टि से– मिट्टी, खाद्य पदार्थ और जमीन में पानी के माध्यम से होने वाले प्रदूषण में कमी आती है। कचरे का उपयोग, खाद बनाने में, होने से बीमारियों में कमी आती है। फसल उत्पादन की लागत में कमी एवं आय में वृद्धि होती है।

अन्तर्राष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पादन की गुणवत्ता का खरा उतरना :–

जैविक खेती, की विधि रासायनिक खेती की विधि की तुलना में बराबर या अधिक उत्पादन देती है। अर्थात् जैविक खेती मृदा की उर्वरता एवं कृषकों की उत्पादकता बढाने में पूर्णतः सहायक है। वर्षा आधारित क्षेत्रों में जैविक खेती की विधि और भी अधिक

लाभदायक है। जैविक विधि द्वारा खेती करने से उत्पादन की लागत तो कम होती है। इसके साथ ही कृषक भाइयों को आय अधिक प्राप्त होती है। तथा अंतराष्ट्रीय बाजार की स्पर्धा में जैविक उत्पाद अधिक खरे उतरते हैं। जिसके फलस्वरूप सामान्य उत्पादन की अपेक्षा में कृषक भाई अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

आधुनिक समय में निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या, पर्यावरण प्रदूषण, भूमि की उर्वरा शक्ति का संरक्षण एवं मानव स्वास्थ्य के लिए जैविक खेती की राह अत्यन्त लाभदायक है। मानव जीवन के संर्वागीण विकास के लिए नितान्त आवश्यक है कि प्राकृतिक संसाधन प्रदूषित न हों, शुद्ध वातावरण रहे एवं पौष्टिक आहार मिलता रहे, इसके लिये हमें जैविक खेती की कृषि पद्धतियों को अपनाना होगा जो कि हमारे नैसर्गिक संसाधनों एवं माननवीय पर्यावरण को प्रदूषित किये बगैर समस्त जनमानष को खाद्य सामग्री उपलब्ध करा सकेगी तथा हमें खुशहाल जीने की राह दिखा सकेगी।

जैविक उत्पाद का बाजार अब दिन प्रति–दिन बढता जा रहा हैं क्योंकि लोग अब जैविक उत्पाद का उपयोग पहले से अधिक कर रहे हैं। इसके उपयोग से मनुष्य का स्वास्थय अच्छा रहता हैं इसलिए जैविक उत्पादन से किसानों को अच्छा दाम भी मिलता हैं। बडी कम्पनिया किसान से अनुबन्ध कर जैविक उत्पाद को खेत से ही उठा रहे हैं। किसान लोकल मंडी में भी अपना उत्पाद बेच कर अधिक मुनाफा कमाकर अपनी आजीविका को सदृढ बना सकते हैं।

AGRI ARTICLES
Publishing Skills...
Estd. 2021